प्रसार पुस्तिका संख्याः- DEE/2021/16

डेग्नाला रोग
जानकारी एवं बचाव

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-14

डेग्नाला रोग जानकारी एवं बचाव

कारण

डेग्नाला रोग फफूंदी के विष से होने वाला रोग है जो आमतौर पर गाय एंव भैंसों को प्रभावित करता है। यह रोग जाड़े के मौसम में अधिक होता है। इस रोग के प्रमुख लक्षण में बीमार पशुओं के पूंछ के बाल झड़ते हैं तथा पूंछ गलने लगता है ।

कारण

* अत्यधिक वर्षा होने पर पशुओं का प्रमुख चारा पुआल सड़ने लगता है एवं उनमें काले रंग का फफुंदी उत्पन्न हो जाता है, ऐसे संक्रमित पुआल के खाने से पशुओं में होता है। यह संक्रमण तथा बीमारी जाड़े के समय में ज्यादा देखने को मिलता है। यह रोग फूजेरियमट्रिसीकोमा नामक फफुंदी के विष के कारण होता है। यह विष धान के पुआल के रखे ढ़ेर में पैदा होता है।

रोग व्यापकता

यह रोग मुख्यतया भैंस एवम् गाय में देखा गया है। सर्वप्रथम यह रोग पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त के डैग्नाला नामक नाले के आस-पास बसे क्षेत्रों में देखा गया था। इसी कारण से इस बीमारी का नाम डैग्नाला पड़ा है। यह रोग एक महामारी के रूप में फेलता है और लगभग 10 वर्ष में एक बार महामारी (EPIDEMIC)के रूप फैलता है। यह सभी के आयु के पशुओं को प्रभावित करता है। समय पर सही ईलाज नहीं होने पर पशुओं की मृत्यु तक हो जाती है।

लक्षण

* पूंछ का बाल गीरना ।
* पूंछ, कान,त्वचा,टांगों पर गलन होना ।
* खूंर का गलना ।
* चमड़ी का कटना ।
* पशुओं में लंगड़ापन होना।

निदान

* इस रोग का निदान रोग के इतिहास जानकर व लक्षणों के आधार पर किया जाता है।
* पुआल का प्रयोगशाला परीक्षण में एच.पी.एल.सी. या एच.पी.टी.एल.सी. विधि से विष का पता लगाया जाता है।
* Sc नामक खनिज के कमी का पता लगाना।

उपचार

* इस रोग का उपचार कठिन है।
* रोगी पशुओं को Vitamin E और Sc दिए जाते हैं।
* पॉच प्रकार के लवण को खीलाने से पशुओं का यह रोग जल्दी ठीक हो जाते हैं।
* फफूंदी नाशक दवा का प्रयोग करना चाहिए।
* प्रभावित पशु को एंटीबायोटिक

बचाव व रोकथाम

* बचाव के लिए बीमारी का कोई टीका उपलब्ध नहीं है।
* धान के पुआल का पूरी तरह से सुखा कर ही खिलाना चाहिए।
* खाने में खनिज लवण 50 ग्राम के हिसाब से खिलाना चाहिए।
* फफूंदी युक्त चारे को पशुओं को नहीं खिलाना चाहिए।

आवश्यक सुझाव :-

- पशुपालकोंको यह सुझाव दिया जाता है कि पशुओं का वर्षा एवं जाड़े के समय सुखा दाना, पुआल एवं भूसा खिलायें ।
- दुधारू पशुओं का नियमित रूप से कॉपर, जिंक, सेलेनियम, विटामिन "ए","डी" युक्त खनिज लवण खिलाना चाहिए।

इस बीमारी के लक्षण प्रकट होने पर तुरंत नजदीक के पशु चिकित्सालय / पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

आलेख एवं प्रस्तुतिकरण:- पल्लव शेखर , सरोज कुमार रजक

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

निदेशक,प्रसार शिक्षा

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना-14

Email: deebasupatna@gmail.com (Official), dee-basu-bih@gov.in

Mob.: +91 94306 02962,+91 80847 79374

First Print: 7992457574/ March 2021 Printed Under - SC -PLAN